BMS ORGANIC

FARMER PRODUCER CO. LTD.

स्वागत संदेश

भारत में फूलों का व्यवसाय या फूलों की खेती–फूलों के पौधे उगाना है, जिसमें बगीचे के पौधे, कटे हुए फूल, पत्तेदार पौधे, गमले में लगे फूल वाले पौधे आदि शामिल हैं। आज के युग में, फूलों या सजावटी पौधों का उपयोग विभिन्न अवसरों पर सजावट या उपहार देने के लिए किया जाता है। उनका उपयोग तेल निष्कर्षण, दवा और इत्र उद्योगों में आवश्यक कच्चे माल के रूप में भी किया जाता है। इस प्रकार, भारत में फूलों की खेती का व्यवसाय शुरू करने के

लिए इसके विपणन और उत्पादन में कृषि–व्यवसाय के उपयोग को समझना चाहिए।

भूमिका

भारत में पुष्प की खेती एक लंबे अरसे से होती रही है, लेकिन आर्थिक रूप से लाभदायक एक व्यवसाय के रूप में पुष्पों का उत्पादन पिछले कुछ सालों से ही प्रारंभ हुआ है। समकालिक पुष्प जैसे गुलाब, कमल ग्लैडियोलस, रजनीगंधा, कार्नेशन आदि के बढ़ते उत्पादन के कारण गुलदस्ते और उपहारों के स्वरूप देने में इनका उपयोग काफी बढ़ा है। पुष्प को मनुष्य के द्वारा सजावट और औषधि के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके अलावा घरों और कार्यालयों को सजाने में भी इनका उपयोग बहुतायत से होता है। मध्यम वर्ग के जीवनस्तर में सुधार और आर्थिक संपन्नता के कारण पुष्प बाजाार के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुख्य बिंदु

01 ग्लेडियोलस की खेती

02 जरबेरा की खेती

03 गेंदे की फूलों की खेती

ग्लेडियोलस की खेती

कट फ्लावर व्यवसाय में ग्लेडियोलस की मांग सर्वाधिक है। तीन महीने के अंदर इसमें फूल आने लगते हैं। फूलों के साथ.साथ इसके कदं बिक्री द्वारा लाभ कमाया जाता है।

खेत की तैयारी–जुताई के बाद दो ट्रोली गोबर खाद, 150 किलोग्राम करंज खल्ली तथा 10 किलो चूना प्रति एकड़ मिलाकर खेत को अच्छी तरह तैयार करें साथी पाटा लगाने के पश्चात मिट्टी को बराबर, एकसार कर लें। मिट्टी उपचार के लिए 10 किलो लिन्डेन पाउडर, एकड़ खेतों में डाल दें। रसायनिक खाद के रूप में यूरिया़फास्फोरस़पोटाश का; (40"20:15 किलोग्राम) का मिश्रण खेतो में डाल दें।

बीजरू ग्लेडियोलस की रोपाई कंदों से की जाई है जिन्हें कार्म कहा जाता है। लगाने के लिए मेड़ 1.52.5 इंच व्यास के कंद ज्यादा उपयुक्त होते हैं। ये कंद प्याज की तरह दिखाई पड़ते हैं।

लगाने की दूरी; **20** सेंटीमीटर **30** X सेंटीमीटर

बीजोपचारः २ ग्राम प्रति लीटर बेविस्टीन के घोल में 15 मिनट डूबकर बीजोपचार किया जाता है।

ग्लेडियोलस की बुआई की विधिः–

1. समतल क्यारी में

2. आलू के समान मेड बनाकर

3. एक मीटर चौड़ी व 1.5 मीटर ऊँची मेड बनाकर

कार्म की संख्याः 60,000–70,000 / एकड़

सिंचाईः– कदं के पूर्णतया अकुरित हो जाने पर पहली सिंचाई। कंद 10.15 दिनों में अंकुरित हो जाते हैं। इसके बाद मौसमी, भूमि की दशा को देखते हुए 15.15 दिनों के अंतराल पर पानी देना चाहिए।

फूल निकलनाः– ग्लेडियोलस के फूल एक लंबी डंडी (स्पाइक) में पंक्ति में आते हैं जो कि प्रजातियों के अनुसार 7.20 तक हो सकते हैं। ये एकलध्बहुल हो सकते हैं। जिस प्रजाति में अधिक फूल होते हैं उसे उतनी अच्छी प्रजाति माना जाता है। कदं लगाने के 65.90 दिनों के अंदर फूल आ जाते हैं। स्पाइक के दो तीन कली में रंग दिखने पर स्पाइक काट लिए जाते हैं। कंदों की खुदाई एवं भंडारण फूल कट जाने के 45 दिन पर किया जाता है।

कंदों के खुदाई के दो सप्ताह पूर्व सिंचाई बंद कर लेनी चाहिए। खुदे कंद को २ ग्राम बेविस्टीन घोल में 15 मिनट डुबोने के पश्चात छायादार कमरे में फैलाकर सुखा लेना चाहिए, फिर भंडारण में डाल देना चाहिए।

ग्लेडियोलस के रोग एवं उनसे बचावः रोटिंग तथा ब्लाईट प्रमुख हैं जिनको केप्टान, बेविस्टीन, रीडोमिल के निअमित छिड़काव से रोका जा सकता है।

जरबेरा की खेती

यह एक उभरता हुआ कट फ्लावर है, जिसका उपयोग बुके बनाने, सजावट में किया जाता है। जरबेरा के द्वारा दोहरा लाभ कमाया जा सकता है।

मिट्टीः अच्छी जलनिकास वाली बलुई दोमट मिट्टी, जिसमें जीवांश की भरपूर मात्रा हो।

बीज रोपने का समयः वर्षा के उपरात–अक्तूबर–दिसबर में।

खेत की तैयारीः– जुताई के बाद, क्यारी में बाँट लें।

क्यारीः– 2 मी0 3 मी0 लंबाई–चौड़ाई

20 सें0मी0– ऊंचाई

खाद की मात्राः– 10 किलो सड़ा हुआ गोबरध्क्यारी

20 ग्राम यूरिया/वर्ग मी0

20 ग्राम पोटाश/वर्ग मी0

20 ग्राम फास्फेट/वर्ग मी0

मिट्टी उपचारः लिन्डेन–25 किलो/हेक्टयेर

लगाने का तरीकाः–2.3 वर्ष पुराने पौधे को विभारित कर इसे पुनः लगाया जाता है। इन विभाजित पौधे को कलम्प कहा जाता है। दो वर्ष पुराने पौधे से 5 कलम (गाँठ) आसानी से तैयारी किया जा सकता है।

पौधे का उपचारः– लगाने के पूर्व प्रत्येक कलम्प के जड़ों को २.3 से0मी0 नीचे से काट दिया जाता है तथा इन्हें 15 मिनट तक बेविस्टीन में (२ ग्राम–लीटर) पानी के घोल में डुबाया जाता है।

लगाने की दूरीः–40 सें0मी0 30 सेंटीमीटर– 50 पौधे/क्यारी–83,833 पौधे/हे.

सिंचाईः– लगाने के पश्चात तुरंत हल्की सिंचाई कर दें। तत्पश्चात सप्ताह में एक बार सिंचाई

मिट्टी चढ़ानाः– तीन चार पत्ते निकलने के पश्चात, यूरिया छिडक कर मिट्टी चढ़ा दें।

पत्ते तथा फूल निकलनाः– 50.65 दिनों के पश्चात पत्ते तथा फूल साथ.साथ निकलते हैं। जब फूल पूरी तरह खिल जाते हैं इन्हें काट लिया जाता है। काटने समय डंठल की लंबाई 50.60 सें0मी0 तक होना चाहिए।

किस्मेंः–कलकत्ता रेड, कलकत्ता ओरेज, कलिम्पोंग यलो, कलकत्ता पिंक, अलसिनिया, जेनेरल कैसर, अम्बर, रोजबेल, इवनिंग बेल्स इत्यादि।

गेंदा फूलों की व्यवसायिक खेती

हमारे राज्य में फूलों का उपयोग दिन.प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिसके कारण राज्य के बड़े शहरों में फूलों की मांग बढ़ती जा रही है।

लगाने का समय/ऋतुः– ग्रीष्मकालीन, वर्षाकालीन तथा शीतकालीन ऋतु।

बीज बुआई

ग्रीष्मकालीन गेंदेः– जनवरी–फरवरी

वर्षाकालीन गेंदेः– मई–जून

शीतकालीन गेंदेः– सिंतबर–अक्तूबर

फूल आने का समय, बीज बोने के 75.90 दिन बाद (अफ्रीका गेंदा)

बीज बोने के 60.75 दिन बाद (फ्रेंच गेंदा)

किस्में

अफ्रीकनः– ऊंचाई 90–100 सेंमी, पत्तियां चौड़ी, नारगी रंग जैसे– पूसा नारंगी एवं पूसा बसंती।

क) पूसा नारगीः– 70.75 सेंमी ऊँची– नारंगी रंग।

ख) पूसा बसंतीः– 55.60 सेंमी ऊँची– पीले फूल, बहुपंखुड़ीयुक्त

एक पौधे में लगभग **60** फूल

अन्य किस्में:– अफ्रीकन येलो, अफ्रीकन ओरेंज, काऊन ऑफ़ गोल्ड।

फ्रेंच गेंदा, ऊंचाई 35–40 सेंमी ऊँची, पीले फूल, चित्तीदार/मिश्रित रंग के 3/4 सें0मो0 आकार के।

किस्में:– पिटाईट ओरेंज, पिटाईट येलो, लेमन ड्राप, डबल हार्मोनी, टेनजेरियन येलो।

मिट्टी का चुनाव:– बलुई दोमट, पी.एच–7–7.5, अच्छे जल निकास वाली।

रसायनिक खाद" 1/1 विक्वं0 यूरिया प्रति हेक्टेयर

4 विक्वं0 एस.एस.पी. प्रति हेक्टेयर

200–300 विक्वं0 गोबर खाद प्रति हेक्टेयर

बिछड़े तैयार करने तथा लगाने के तरीके:– बीज द्वारा तथा कलम द्वारा

बीज द्वारा:– क्यारी बनाकर–15 सें.मी. ऊँची. 1 मी. चौड़ी तथा 5–6 से.मी.

बीज दर:– 700–800 ग्राम/हे.

मिट्टी उपचार 0.3: कैप्टन का छिड़काव

बीज लगाने की दूरी:– 6–8 से.मी.पौधे–पौधे

२ से.मी. गहराई

लगाने के तुरंत बाद हल्की सिंचाई।

रोपाई:– बीज बोने के 30 दिन बाद, 3–4 पत्तियाँ आने पर।

दूरी:– 40 सें.मी. 30 सेंटीमीटर– अफ्रीकन गेंदा

20 सें.मी. 20 सेंटीमीटर– फ्रेंचा गेंदा

सिंचाईः– लगाने के तुरंत बाद सिंचाई

7–10 दिनों के अन्तराल पर– जाड़े में

4–5 दिनों के अन्तराल पर– गर्मी में

पौधों के थोडा बड़े होने पर उसके ऊपरी भाग को तोड़ दें ताकि ज्यादा से ज्यादा डाली निकले।

तुड़ाई एवं उपजः– जाड़े में जनवरी, बरसार में सिंतबर तथा गर्मी में अप्रैल–मई में फूलों का आना शुरू जो जाता है।

200 क्विं/हे. – अफ्रीकन–5 रु./किलो 1 लाख

100 क्विं/हे. – फ्रेंच – 5 रु./किलो 50 हजार

खर्च– 20–25 हजार रूपये/हे.

शुद्ध लाभ–30–80 हजार रूपये/हे.

रोग एवं कीड़े – 0.3ः ब्रेसीकॉल

पुष्प गलन–0.2ः इंडोफिल एम. 45/ली.

पाउडरी मिल्ड्यू– 0.2ः सल्फेक्स

स्पीइडर नाइट एवं लीफ हॉपर–रोगर/मेटा सिस्टोक्स–0.2ः छिड़काव।

BMS Organic

Farmer Producer Co. Ltd.

THANK YOU